

## ● पढ़ो और समझो :



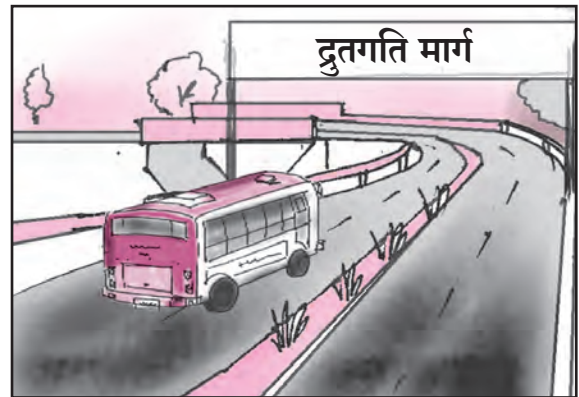
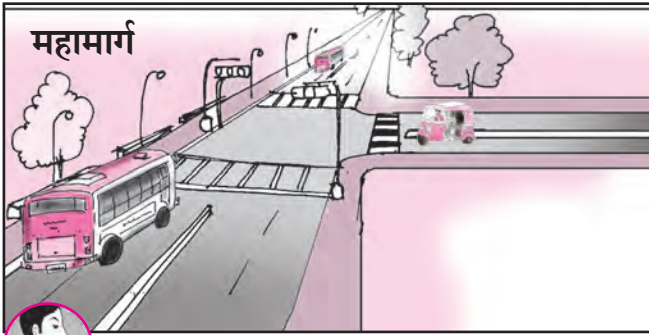
## १४. मैं सड़क हूँ



मैं सड़क हूँ। सब मुझ पर चलते हैं। आदमी, रिक्शा, बस, साइकिल सभी मुझ पर इधर से उधर आते-जाते हैं। बालक, जवान, बूढ़े सभी के काम आती हूँ। मैं घर और विद्यालय के बीच सेतु हूँ। लोग मेरे किनारे मकान बना लेते हैं। सामान बेचने वाले भी मेरे दोनों ओर दुकानें लगाते हैं। चौराहे पर पुलिस का सिपाही वर्दी पहने खड़ा होता है। वह यातायात को अनुशासित रखता है। रास्ता बदलने के लिए कई बार लोगों को मुड़ना पड़ता है पर इसमें मेरा दोष नहीं है। मैं तो सदा सीधी चलने के लिए तैयार हूँ। लोग अपनी जरूरत से कभी मुझे टेढ़ी, नीची और ऊँची बना देते हैं।

मेरा आरंभिक स्वरूप कच्चा था। उसपर बैलगाड़ी, ताँगा, ऊँटगाड़ी जैसे वाहन चलते थे फिर कोलतार डालकर पक्की सड़कें बनने लगीं। आजकल नई तकनीक आ गई है। इस तकनीक में मुझे सीमेंट से बनाने लगे

हैं। अपना यह नया रूप बहुत अच्छा लगता है। दुख उस समय होता है जब लोग गंदा कर देते हैं। लोग पान खाते हैं। बिना सोचे-समझे जहाँ जी में आया मुझ पर थूक देते हैं। लोग जगह-जगह मुझे खोदकर गड्ढे बना देते हैं। इससे मेरे शरीर पर बहुत से घाव हो जाते हैं। गड्ढों के कारण अनेक दुर्घटनाएँ होती हैं फिर भी न जाने लोग ऐसा क्यों करते हैं? मैं सदा साफ-सुथरी रहना चाहती हूँ। सबको रास्ता दिखाना चाहती हूँ। मेरे कारण देश में दूर-दूर रहने वाले लोग एक-दूसरे से आसानी से मिल पाते हैं। मैं जहाँ जाती हूँ, वह परिसर विकसित हो जाता है। मैं चाहती हूँ कि हर गाँव को एक-दूसरे से जोड़ूँ, लोगों में मेल-जोल बढ़ाऊँ। पूरे देश में खुशहाली लाऊँ। विश्वास है कि एक दिन मेरी इच्छा निश्चित ही पूरी होगी।



### १. अंत्याक्षरी खे लो :

सड़क....किनारे....रास्ता....तकनीक....काम....मकान....निकिता....ताँगा....गाजर.....रश्मि।

२. सड़क कैसे साफ-सुथरी रख सकते हैं, बताओ।

- ☐ उचित उच्चारण, आरोह-अवरोह के साथ वाचन करें और अनुवाचन कराएँ। विद्यार्थियों से अपने बारे में पाँच वाक्य कहलवाएँ। पगडंडी, कच्ची सड़क, पक्की सड़क पर चर्चा कराएँ। नदी, उद्यान आदि की आत्मकथा प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित करें।